श्रम विभाग

आदेश

दिनांक 5 जनवरी, 1987

सं.० म्रो०वि० एफ.डी/189-86/407.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० राज थीं टैक्सेटाईल द्वारा फरीदाबाद पावलूम म्रोनर्स एसीसिएशन प्लाट नं० 10-11 सैक्टर 24, फरी अवाद के श्रामिक श्री राजबनी मार्फत भारतीय मजदूर संघ विश्वकर्मा भवन नीलम बाटा रोड, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की बारा 10 की उन-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यवाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जो-अन-57/11245, दिनांक 7 फरवरों, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गढ़ित अन न्यायालन फरोदाबाद को विवादप्रत या उत्तर्थ सुतंगत या उत्तरे सम्बन्धित नीवे लिखा मानना न्यायितग्रंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्देश्य करते हैं जो कि उक्त प्रवन्त्वकों तथा अभिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामना है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राजवली की सेवा समाप्त की गई है या उससे स्वयं गैर-हाजिर होकर नीकरी से पूर्वग्रहणाधिकार (लियन) खोया है ? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/एफडी०/237-86/414--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० रसीक इन्टरनेशनल लि०, 40-45, डी० एल० एक० फरीदाबाद के श्रीमक श्री फून कुमार गर्मा, मार्फत रसीक इन्टरनेशनल वर्करज यूनियन, जी-162, इन्दिस नगर सैक्टर-7 फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-धम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथपड़ते हुए अधिनूचना सं० 11495-गो-अन-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की वारा 7 के अभीन गठित अन न्यायालय, फरोशबाद, को विवादशस्त या उत्तते सुनंगत या उत्तते सन्वन्थित नोचे लिखा मानता न्यायिनिर्गय एवं रंचाट तीन मान में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रयाग अधिक के बीच या तो विवादशस्त वानता है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मानला है :---

क्या भी फून जुमार शर्मा, की तेन श्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत ्का हकदार है ?

सं श्रो वि एफडी | 127-86 | 421. — चूंकि हरियाण। के राज्यपाल की राय है कि मैं मुख्य प्रशासक, हरियाणा, शहरी विकास, प्राधिकरण, कोठी नं 231, सैक्टर 18-ए, चण्डी गढ़, (2) कार्यकारी अभियन्ता हरियाणा, शहरी विकास, प्राधिकरण, डिविजन नं 2, फरीदाबाद के श्रमिक श्री महीपाल मार्फत श्री श्याम सुन्दर गुता, 50, नीलम चौक, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधसूचना र की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री महीपाल की सेवाग्नों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

श्रार० एस० श्रग्नवाल, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।